International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारतीय महिलाओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक: एक अध्ययन

डॉ उदय सिंह राजपूत[1], अनामिका पुंडीर[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान एवं मानवाधिकार विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश
[2]रीसर्च स्कॉलर, राजनीति विज्ञान एवं मानवाधिकार विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश

शोध सारांश :
हम इक्कीसवीं सदी के पहले दो दशक पूरे कर रहे हैं, उसके पश्चात् भी हम अभी तक कुछ ऐसे व्यवहारों से नहीं उभर पाए है जो मानव की तार्किकता पर प्रश्न चिन्ह लगाते है। लैंगिक असमानता इनमें से एक है जो समाज के कई पहलुओं में व्याप्त है। राजनीति संभवतः वह क्षेत्र है जहां यह सबसे अधिक देखने को मिलती है। राजनीतिक व्यवस्था के किसी भी स्तर पर न तो महिलाओं का उचित अनुपात में प्रतिनिधित्व है और न ही मतदान में उनका अनुपात बराबर है। भारतीय चुनाव आयोग के उपलब्ध आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि ऐतिहासिक रूप से, मतदान प्रतिशत के मामले में महिलाएं पुरुषों से पीछे हैं। हालाँकि, हाल के चुनावों में यह अंतर कम हुआ है। 2019 के लोकसभा चुनावों में न केवल सबसे अधिक संख्या में महिला उम्मीदवार, बल्कि सबसे अधिक संख्या में महिला सांसद भी चुनी गईं भारत के चुनावी इतिहास में पहली बार, पुरुष और महिला मतदाताओं का मतदान प्रतिशत लगभग बराबर था। हालाँकि, महिला मतदाताओं के बीच यह मतदान सभी राज्यों में एक समान नहीं है। जहां कुछ राज्यों में मतदान के मामले में महिलाएं पुरुषों से आगे रहीं, वहीं अन्य राज्यों में ये पुरुषों की अपेक्षा कम है | सामान्यता मतदान के मामले में महिलाएं अभी भी पुरुषों से पीछे हैं। इस शोध अध्ययन के अंतर्गत महिलाओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन शामिल है।

महत्वपूर्ण शब्द: मतदान व्यवहार, राजनीतिक भागीदारी, महिला सशक्तिकरण, चुनाव, राजनीतिक चर्चा

प्रस्तावना

भारतीय राजनीतिक संस्कृति में, महिलाओं को अधिकतर अधीनस्थ राजनीतिक कर्ता माना गया है। गेल ओमवेट ने 1987 में लिखा था कि राजनीतिक सत्ता से महिलाओं का बहिष्कार "उत्पादक" काम या यहां तक कि संपत्ति के अधिकारों से उनके बहिष्कार से भी अधिक है (इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 2019)। बहुत लंबे समय से, स्थानीय राजनीति से लेकर राष्ट्रीय स्तर की राजनीति तक, महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी मतदाताओं और निर्वाचित प्रतिनिधियों दोनों के रूप में उनकी भूमिकाओं के संबंध में प्रतिबंधित रही है, हालांकि हाल के दिनों में इस संबंध में कुछ बदलाव हुए हैं। हाल के चुनावों में महिला मतदाताओं की चुनावी भागीदारी में वृद्धि देखी गई है। भारतीय राजनीति में महिलाओं की सीमित भागीदारी का एक मुख्य कारण महिलाओं की स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय लेने में असमर्थता है, उनमें से कई महिलाएं परिवार के पुरुष सदस्यों पर निर्भर रहती हैं। कई अध्ययनों ने इस धारणा का समर्थन किया है कि महिलाओं ने लगातार दूसरों की सलाह पर ध्यान दिया है और अपने परिवार के साथ मतदान किया है (देशपांडे 2009; सरदेसाई और अत्री, 2017)। महिलाओं को अक्सर न केवल चुनावों में मतदान के मामले में, बल्कि राजनीतिक प्रतिनिधियों के रूप में भी 'रबर स्टाम्प' माना जाता है, और उनके निर्णयों को बड़े पैमाने पर पुरुषों द्वारा प्रभावित माना जाता है। (कुमार, 2022)

महिलाओं की समान राजनीतिक भागीदारी लोकतांत्रिक शासन के लिए एक पूर्व शर्त मानी जाती है,हालांकि,परिवार, सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंडों, पारंपरिक लैंगिक रूढ़िवादिता, भेदभावपूर्ण सांस्कृतिक प्रथाओं और संस्थागत प्रतिबंधों नियमों से जुड़ी बाधाओं के कारण महिलाएं राजनीति के क्षेत्र में हाशिए पर रहती हैं। शिक्षा,आय,जाति,निवास स्थान,उम्र और क्षेत्र जैसे सामाजिक-जनसांख्यिकी कारक भी महिलाओं की

राजनीतिक भागीदारी को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं (कुमार एवं गुप्ता,2015)। व्यक्ति का राजनीति में न केवल भाग लेना वरन सक्रीय रूप से भाग लेना अनेक कारकों पर निर्भर करता है और यही बात कुछ भिन्न विशेषताओं के साथ महिलाओं के सन्दर्भ में भी लागू होते है। राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने की प्रेरणा विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है; जैसे 'राजनीतिक प्रोत्साहन'(राजनीति और राजनीतिक चर्चा में रुचि), 'सामाजिक पहचान' (धर्म,स्थानीयता और जाति) और 'व्यक्तिगत गुण' (आयु,वर्ग,शिक्षा का स्तर और मीडिया से सम्बन्ध) (मिश्रा एवं गुप्ता,2019, 42)। इसके अतिरिक्त,वर्बा एट अल (1995) ने अपने स्पष्टीकरण में कि लोग राजनीति में भाग क्यों नहीं लेते हैं, भागीदारी की कमी को किसी के मनोवैज्ञानिक स्वभाव से जोड़ते हैं,जो ज्यादातर मामलों में राजनीति में रुचि,राजनीतिक प्रभावकारिता,राजनीतिक विश्वास और संतुष्टि से मापा जाता है। संसद में पेश किए गए 2017-2018 के आर्थिक सर्वेक्षण में, राजनीति में प्रवेश से घरेलू जिम्मेदारियां,समाज में महिलाओं की भूमिकाओं के बारे में प्रचलित सांस्कृतिक दृष्टिकोण,परिवार से समर्थन की कमी,आत्मविश्वास की कमी और वित्त जैसे कारकों को महिलाओं को रोकने वाले कारकों के रूप में उद्धृत किया गया है। (द इकोनॉमिक टाइम्स,29 जनवरी,2018)।

पहले के शोधकर्ताओं ने किसी एक देश या दुनिया भर में महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व के स्तर की व्याख्या करते समय आपूर्ति-पक्ष और मांग-पक्ष कारकों की व्याख्या की है (रान्डेल,1987,नॉरिस,1997 पैक्सटन एट अल, 2007 में उद्धृत)। यह अवधारणा नॉरिस और लोवेनडुस्की (1995) के पूर्व के अध्ययनों में भी देखी जा सकती है। उदाहरण के लिए राजनितिक व्यवस्था में प्रवेश के लिए कुछ योग्यता चाहिए; जैसे- रुचि,महत्वाकांक्षा और ज्ञान जैसी व्यक्तिगत विशेषताओं और साथ ही साथ समय,नेटवर्क, नागरिक कौशल,शिक्षा और आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। और इन योग्यताओं के साथ व्यक्ति राजनीतिक व्यवस्था में भर्ती होने के लायक होता है । आम तौर पर इन योग्यताओं की पूर्ति पुरुषों द्वारा की जाती है तो योग्यताओं के साथ मांग व पुरुषों द्वारा इसकी पूर्ति से ही राजनीतिक व्यवस्था चलती आ रही है| जो महिलाएं इन योग्यताओं को पूरा करती हैं वे ही व्यवस्था में प्रवेश ले सकती हैं । महिलाओं के लिए कुछ सामाजिक नियमों ने इन योग्यताओं से पहले ही वंचित किया हुआ है तब यह बात कितनी गंभीर है कि महिलाओं को राजनीति में भाग लेने का अवसर देना मात्र एक दिखावा है| (पैक्सटन एट अल।,2007)। आपूर्ति पक्ष के कारक राजनीतिक भागीदारी के लिए महिलाओं को उचित नहीं मानते। इसलिए कहा जा सकता है कि ,राजनीतिक कार्यालय के लिए महिलाओं की उपलब्धता आंशिक रूप से लिंग समाजीकरण द्वारा निर्धारित होती है, जो राजनीति के संबंध में महिलाओं की रुचि,ज्ञान और महत्वाकांक्षा को प्रभावित करती है, और आंशिक रूप से बड़े पैमाने पर सामाजिक संरचनाओं द्वारा शिक्षा और रोजगार के लिए महिलाओं के अवसरों को सीमित करती है। परिणामस्वरूप महिलाएं राजनीतिक क्षेत्रों में प्रवेश के अवसर होने के बाद भी भाग नहीं ले पाती है |

मतदान के माध्यम से राजनीतिक भागीदारी

चुनाव में मतदान को राजनीतिक भागीदारी के पहले कदम के रूप में देखा जाता है, और यह मताधिकार कड़ी मेहनत से अर्जित अधिकार है जो लोगों को विभिन्न चरणों में प्राप्त हुआ है। यह पहले पुरुषों को प्राप्त हुआ क्योंकि वे संपत्ति के मालिक थे जो नागरिकता की स्थिति और मताधिकार का दावा कर सकते थे, और फिर यह संघर्षों के पश्चात् लोकतांत्रिक समाज के अन्य वर्गों को भी प्राप्त हो गया। कई स्थापित लोकतांत्रिक देशों ने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान महिलाओं को मतदान का अधिकार दिया, जबकि भारत ने अपने सभी नागरिकों को सार्वभौमिक मताधिकार दिया। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 326 भारत के प्रत्येक वयस्क नागरिक को लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र की परवाह किए बिना वोट देने के अधिकार की गारंटी देता है। बहरहाल, मतदान प्रतिशत में लैंगिक विभाजन स्पष्ट दिखाई दे रहा था। जब कोई भारत की आज़ादी के बाद के दशकों में हुए चुनावों पर नज़र डालता है, तो पुरुषों और महिलाओं के मतदान प्रतिशत में स्पष्ट अंतर दिखाई देता था। दरअसल, 2019 के लोकसभा चुनाव में यह अंतर नगण्य था। आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि कई राज्यों में मतदाताओं के रूप में महिलाओं की संख्या (तालिका 1.2) पुरुषों से अधिक है (कुमार और गुप्ता 2015)। इसे मतदाताओं में महिलाओं की बढ़ती संख्या के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। 1990 के दशक के बाद से, मतदाताओं के रूप में महिलाओं के पंजीकरण में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है (देशपांडे 2004: 5431)।

आजादी के पश्चात् अब तक हुए चुनावों में महिला मतदाताओं की भागीदारी का यदि विश्लेषण किया जाए तो काफी अंतर दिखता है। भारत के चुनाव आयोग के उपलब्ध आंकड़ों से पता चलता है कि ऐतिहासिक रूप से, मतदान प्रतिशत के मामले में महिलाएं पुरुषों से बड़े अंतर से पिछड़ गई हैं। उदाहरण के लिए,1962 के आम चुनावों में, पुरुष मतदान महिला मतदान से लगभग 12.3% अधिक था ,वही 1967 में यही 11.78% था । हालाँकि, यह अंतर अब कम हुआ है (तालिका 1.1)। 2019 के चुनावों में न केवल सबसे अधिक संख्या में महिला उम्मीदवारों (724) ने चुनाव लड़ा, बल्कि सबसे अधिक संख्या में महिलाएं लोकसभा के लिए चुनी भी गईं। भारत के चुनावी इतिहास में पहली बार पुरुषों और महिलाओं का

मतदान प्रतिशत लगभग समान रहा| यह क्रमशः 66.79% और 66.68% जिसमें केवल 00.11 का अंतर था। कपूर और रवि (2014) ने मतदान में घटते लैंगिक अंतर की इस घटना को 'मूक क्रांति' के रूप में परिभाषित किया है।

सारणी 1.1 लोकसभा चुनावों (1962-2019) में महिला तथा पुरुष मतदाताओं के बीच अंतर

क्र.	लोकसभा चुनाव	पुरुष मतदाता (प्रतिशत में)	महिला मतदाता (प्रतिशत में)	महिला- पुरुष मतदान में अंतर (प्रतिशत में)
1	1962	63.3	46.6	16.7
2	1967	66.7	55.5	11.2
3	1972	60.9	49.1	11.8
4	1977	66	54.9	11.1
5	1980	62.2	51.2	11
6	1984	68.4	59.2	9.2
7	1989	66.1	57.3	8.8
8	1991	61.6	51.4	10.2
9	1996	62.1	53.4	8.7
10	1998	66	58	8
11	1999	64	55.7	8.3
12	2004	61.7	53.3	8.4
13	2009	60.2	55.8	4.4
14	2014	67.1	65.6	1.5
15	2019	67.3	66.9	0.4

स्रोत : सी. एस. डी. एस. डाटा यूनिट

महिलाओं के मतदान में यह परिवर्तन अचानक नहीं हुआ; इसकी शुरुआत 2004 के लोकसभा चुनाव से हो गई थी| लगातार लोकसभा चुनावों में भी पुरुष और महिला मतदान के बीच का अंतर कम हुआ, 2019 के लोकसभा चुनावों में, पुरुषों और महिलाओं के लिए समान मतदान हुआ। हालांकि यह ख़ुशी का अवसर है और इसे मनाया जाना चाहिए, लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि इस बदलाव में किसका योगदान है। साथ ही साथ यह वृध्दि प्रत्येक राज्य में नहीं देखी गई| इस शोध अध्ययन के अंतर्गत विशेष रूप से चुनावों में और सामान्य रूप से राजनीति में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के इस पैटर्न को समझना तथा उन कारणों को जानने का प्रयास किया गया है। यह महिलाओं की चुनावी भागीदारी में इस बदलाव के लिए जिम्मेदार कारकों का भी विश्लेषण करता है। यह देखता है कि क्या महिलाओं की बढ़ी हुई भागीदारी मतदान तक ही सीमित है या क्या इसे चुनाव से संबंधित अन्य गतिविधियों में भी देखा जा सकता है, जिसमें उम्मीदवारों के लिए धन इकट्ठा करना, चुनावी बैठकों/रैलियों में भाग लेना, चुनाव अभियानों में भाग लेना या पर्चे बांटना शामिल है। हालांकि यह तर्क दिया गया है कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में राजनीति में कम सक्रिय और चौकस रही हैं, लिंग और राजनीतिक भागीदारी के विभिन्न रूपों के बीच संबंध कैसे बदल गए हैं और समय के साथ समान बने हुए हैं। यह मौजूदा लिंग भेदों के लिए स्पष्टीकरण प्रदान करने का भी प्रयास करता है।

सारणी 1.2 मतदाता मतदान में लिंग अंतर की राज्य सूची: लोकसभा चुनाव 2019 (प्रतिशत में)

क्र.	राज्य सूची	प्रतिशत
A.	**ऐसे राज्य जहां मतदान के मामले में महिलाएं पुरुषों से आगे रहीं**	
1	उत्तराखंड	+5.69
2	मेघालय	+5.07
3	अरुणाचल प्रदेश	+4.51
4	बिहार	+4.45
5	हिमाचल	+3.69
6	मणिपुर	+2.78
7	झारखण्ड	+2.73
8	गोवा	+2.48
9	केरला	+2.32
10	ओड़िसा	+2.10
B.	**लगभग समान मतदान वाले राज्य**	
1	उत्तर प्रदेश	+0.73
2	तमिलनाडु	+0.35
3	पश्चिम बंगाल	+0.23
4	तेलंगाना	-0.29
5	आंध्र प्रदेश	-0.44
6	आसाम	-0.44
7	सिक्किम	-0.61
8	पंजाब	-0.63
9	दिल्ली	-0.66
10	नागालैंड	-0.76
11	त्रिपुरा	-0.89
12	राजस्थान	-0.99
C.	**राज्य जहां पुरुष मतदाताओं ने महिलाओं मतदाताओं से अधिक मतदान किया**	
1	मिजोरम	-1.29
2	हरियाणा	-1.43
3	छत्तीसगढ़	-1.87
4	जम्मू और कश्मीर	-1.95
5	कर्नाटक	-1.99
6	महाराष्ट्र	-3.74
7	मध्य प्रदेश	-5.08
8	गुजरात	-6.18

स्रोत :इलेक्शन कमीशन ऑफ़ इंडिया

महिलाओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक

महिलाओं की समान मतदान भागीदारी को अक्सर लोकतांत्रिक शासन के लिए एक पूर्व शर्त माना जाता है। जबकि, परिवार, सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंडों, पारंपरिक लिंग रूढ़ियों, भेदभावपूर्ण सांस्कृतिक प्रथाओं और संस्थागत प्रतिबंधों से जुड़ी बाधाओं के कारण महिलाएं राजनीति में हाशिए पर हैं। इनके अलावा, शिक्षा, आय, जाति, इलाका, उम्र और क्षेत्र जैसे सामाजिक-जनसांख्यिकी कारक भी मतदान में भागीदारी के अवसर हासिल करने वाली महिलाओं को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं (कुमार और गुप्ता, 2015)। राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने की प्रेरणा विभिन्न कारकों पर भी निर्भर करती है; जैसे - राजनीतिक प्रोत्साहन (राजनीति और राजनीतिक चर्चा में रुचि), सामाजिक पहचान (धर्म, स्थानीयता और जाति) और व्यक्तिगत गुण (आयु, वर्ग, शिक्षा का स्तर और मीडिया एक्सपोज़र) (मिश्रा और गुप्ता, 2019: 42) इसके अतिरिक्त, वर्बा एट अल (1995), अपने स्पष्टीकरण में दर्शाते हैं कि लोग राजनीति में भाग क्यों नहीं लेते हैं, भागीदारी की कमी को किसी के मनोवैज्ञानिक स्वभाव से जोड़ते हैं, जो ज्यादातर मामलों में राजनीति में रुचि, राजनीतिक प्रभावकारिता, राजनीतिक विश्वास और लोकतंत्र के साथ संतुष्टि से मापा जाता है। संसद में पेश किए गए 2017-2018 के आर्थिक सर्वेक्षण में घरेलू जिम्मेदारियां, समाज में महिलाओं की भूमिकाओं के बारे में प्रचलित सांस्कृतिक दृष्टिकोण, परिवार से समर्थन की कमी, आत्मविश्वास की कमी और वित्त जैसे कारक बताए गए हैं, जो महिलाओं को राजनीति में प्रवेश से रोकते हैं और जो मतदान व्यवहार में भी बाधक बनते है (द इकोनॉमिक टाइम्स, 29 जनवरी, 2018)।

a.आयु

उम्र और राजनीतिक भागीदारी का सकारात्मक संबंध है। उम्र बढ़ने के साथ-साथ चुनावी गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ती जाती है। यह प्रवृत्ति स्थापित सिद्धांत के अनुरूप है कि उम्र के साथ राजनीतिक ज्ञान और रुचि भी बढ़ती है, जो किसी को राजनीति में सक्रीय भाग लेने के लिए प्रेरित करती है (क्रिटेंडेन 1963; ग्लेन एंड ग्रिम्स 1968)।

b.स्थानीयता

एक श्रेणी के रूप में महिलाएँ एक समरूप समूह नहीं हैं। विभिन्न सामाजिक-जनसांख्यिकी कारक चुनावी राजनीति में उनकी भागीदारी के स्तर को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, शहरी महिलाओं की तुलना में ग्रामीण भारत की महिलाएं चुनावी राजनीति में अधिक सक्रिय हैं। इस बढ़ी हुई ग्रामीण भागीदारी का संभावित कारण पंचायती राज संस्थाएँ (PRIS) हो सकती हैं जो महिलाओं को राजनीतिक रूप से सशक्त बनाती हैं और ग्राम सभाओं आदि में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करती हैं।

c.शिक्षा का स्तर

शिक्षा का स्तर भी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को प्रभावित करता है। विभिन्न अध्ययनों ने उच्च स्तर की शिक्षा और उच्च राजनीतिक भागीदारी के बीच सकारात्मक संबंध की ओर इशारा किया है। नी एट अल. (1996) का मानना है कि शैक्षिक वृद्धि सामाजिक जुड़ाव को बढ़ावा देती है, जो आगे चलकर राजनीतिक उन्नति की ओर ले जाती है। भारतीय संदर्भ में, यह पाया गया है कि जिन महिलाओं की शिक्षा तक बेहतर पहुंच है, चुनावी राजनीति में उन लोगों की तुलना में वे अधिक सक्रिय हैं जिनकी शिक्षा तक पहुंच सीमित है या बिल्कुल नहीं है। दिलचस्प बात यह है कि कॉलेज स्तर और उससे ऊपर की शिक्षा प्राप्त महिलाओं की तुलना में सामान्य रूप से शिक्षित महिलाएं चुनावी राजनीति में अधिक सक्रिय हैं। तो, नी एट अल द्वारा चित्रित अमेरिकी राजनीति के विपरीत (1996), भारत में महिलाओं की शिक्षा के स्तर और उनकी राजनीतिक भागीदारी के बीच कोई रैखिक संबंध नहीं है।

d.वर्ग

सामाजिक-आर्थिक वर्ग भी चुनावी गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी निर्धारित करता है। सामाजिक और आर्थिक पदानुक्रम में सबसे निचले पायदान पर मौजूद महिलाओं की तुलना में उच्च आर्थिक और उच्च सामाजिक (जाति) वर्ग की महिलाएं चुनावी राजनीति में अधिक सक्रिय पाई गईं (सारणी .....)।

सारणी 2.1 महिला मतदाताओं को चुनावी भागीदारी के स्तर को प्रभावित करने वाले और सामाजिक-आर्थिक करक (%)

	सक्रिय चुनावी भागीदारी		
	बिल्कुल भी सक्रिय नहीं	कुछ हद तक सक्रिय	अत्यधिक सक्रिय
स्थानीयता			
शहरी	76	16	8
ग्रामीण	80	15	5
शिक्षा का स्तर			
गैर साक्षर	84	12	4
प्राइमरी तक	75	19	6
मैट्रिक तक	75	17	8
12वीं पास/इंटरमीडिएट	75	17	8
कॉलेज और उससे ऊपर	78	15	7
आयु के अनुसार समूह			
18 से 25 वर्ष	83	13	4
26 से 35 वर्ष	78	17	6
36 से 45 वर्ष	75	18	7
46 से 55 वर्ष	75	17	9
56 वर्ष और उससे अधिक	75	16	9
जाति			
ऊंची जाति	78	15	7
अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी)	75	18	7
अनुसूचित जाति (एससी)	81	14	5
अनुसूचित जनजाति (एसटी)	81	15	5
अन्य	81	12	6
आर्थिक वर्ग			
गरीब	83	13	4
निचला	78	16	6
मध्य	74	19	7
उच्च श्रेणी	78	14	9

e.जाति

भारत में किसी भी व्यक्ति के जन्म के पश्चात् ही एक विशेष प्रकार की पहचान जुड़ती है जिसे जाति कहा जाता है और यह एक ऐसी पहचान है जो किसी भी स्थिति में व्यक्ति के साथ बनी रहती है तो ये निश्चित ही उसके कार्य तथा निर्णय में दृष्टिगोचर होती है। भारत में जाति मतदान व्यवहार का

निर्धारक बनी हुई है। इसकी समाज में गहरी जड़ें हैं और यह सभी स्तरों पर सामाजिक संबंधों का एक महत्वपूर्ण आधार है। कई प्रावधानों को अपनाने के बावजूद, जो कार्रवाई और इसके आधार पर भेदभाव पर रोक लगाते हैं, जाति राजनीतिक व्यवहार का निर्धारक बनी हुई है। राजनीति में जाति का राजनीतिकरण और जातिवाद भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की एक सर्वविदित वास्तविकता रही है। भारत में राजनीतिक दल, बिना किसी अपवाद के, अपनी नीतियों, कार्यक्रमों और चुनाव रणनीतियों को तैयार करते समय हमेशा जाति कारक को ध्यान में रखते हैं। (हजारिका, 2015) चुनाव लड़ने के लिए उम्मीदवारों के चयन में जाति एक कारक है, महिला मतदाता महिला होने के साथ ही साथ किसी न किसी जाति के सदस्य होती है इसलिए जाति महिला मतदाताओं को चुनाव में वोट का करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

f. धर्म: भारत में एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना - हर किसी को धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार की गारंटी देकर, हर धर्म को समान मानना और किसी भी धर्म को राज्य धर्म के रूप में मान्यता न देना - धर्म की भूमिका को रोकने में सफल नहीं रहा है। सामान्यतः राजनीतिक व्यवहार और विशेष रूप से मतदान व्यवहार के निर्धारक के रूप में यह एक महत्वपूर्ण करक है |ऐसे कई राजनीतिक दलों और नव-राजनीतिक समूहों का अस्तित्व, जो एक विशेष धर्म से जुड़े हुए हैं, उदाहरण के लिए, मुस्लिम लीग, अकाली दल, हिंदू महासभा, शिव सेना आदि, धर्म की निरंतर भूमिका मतदान व्यवहार निर्धारित करने में रही है। भारतीय समाज का धार्मिक बहुलवाद भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के परिवेश की एक प्रमुख विशेषता है और यह राजनीतिक दलों के बीच सत्ता के लिए संघर्ष को बहुत प्रभावित करता है। उम्मीदवारों का चयन किसी विशेष निर्वाचन क्षेत्र में धार्मिक बहुमत की उपस्थिति को ध्यान में रखकर किया जाता है। उम्मीदवार सह-धार्मिक मतदाताओं के साथ धार्मिक कार्ड और अन्य धार्मिक समुदायों के सदस्यों के साथ धर्मनिरपेक्ष कार्ड खेलकर वोट मांगने में संकोच नहीं करते हैं। राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धार्मिक स्थलों का उपयोग भी एक मानक अभ्यास है, खासकर चुनावों के दौरान। राजनीतिक दलों और अन्य समूहों द्वारा फिर से सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों का धर्मी करण किया जाता है। मतदाता अक्सर धार्मिक आधार पर मतदान करते हैं।(हजारिका, 2015)

g.भाषा: भारत एक बहुभाषी राज्य है। भाषावाद भी मतदान व्यवहार निर्धारण में कारक के रूप में कार्य करता है। भाषाई आधार पर राज्यों का संगठन भारत में राजनीति के कारक के रूप में भाषा के महत्व को पूर्णतः दर्शाता है। राज्यों में कुछ समस्याएँ रही हैं, जैसे कि उस राज्य में किसी विशेष भाषा की स्थिति, या किसी राज्य की भाषा की स्थिति की गुणवत्ता से संबंधित। चूकि लोगों का अपनी भाषाओं से भावनात्मक लगाव होता है, इसलिए जब भी भाषा से जुड़ा कोई मुद्दा आता है तो वे आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। भाषायी रुचियाँ हमेशा मतदान व्यवहार को प्रभावित करती हैं। (हजारिका, 2015) महिला मतदाता भी इस कारक से प्रभावित होती हैं ।

h.मीडिया से सम्बन्ध

नागरिक समाचार पत्र या वेबसाइट पर समाचार पढ़कर, टेलीविजन पर समाचार देखकर या रेडियो पर समाचार सुनकर समाचार मीडिया के संपर्क में आने से राजनीति के बारे में अपना ज्ञान बढ़ा सकते हैं और राजनीति प्रक्रिया में भाग लेने की अपनी प्रवृत्ति बढ़ा सकते हैं। समाचार मीडिया के संपर्क में आने से नागरिकों का राजनीतिक ज्ञान मजबूत होता है, राजनीति से निपटने की उनकी अनुमानित क्षमता बढ़ती है और परिणामस्वरूप राजनीति में उनकी भागीदारी की संभावना बढ़ जाती है (हॉफमैन और थॉमसन, 2009)। महिला मतदाताओं से जब यह पूछा गया कि 'आपके समाचार का प्राथमिक स्रोत क्या है?' के जवाब में, टेलीविजन अधिकांश भारतीय महिलाओं (59%) के लिए समाचार का 'मुख्य स्रोत' बनकर उभरा, जबकि केवल 10% ने कहा हैं कि समाचार पत्र उनका अपना स्रोत हैं। वही 13% भारतीय महिलाओं के लिए मित्र और परिवार जैसे अनौपचारिक समाचार चैनल जानकारी के सबसे महत्वपूर्ण स्रोत थे। 11% के लिए, अन्य स्रोत, जैसे सोशल नेटवर्किंग साइट्स और उनके फोन, जानकारी इकट्ठा करने का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत हैं। (महिला अध्ययन, 2019)|

सारणी 2.2 महिला मतदाताओं का मीडिया से सम्बन्ध

समाचार का प्राथमिक स्रोत	प्रयोग	प्रयोग नहीं	कोई उत्तर नहीं
टेलीविजन	77	22	1

समाचार पत्र	47	50	3
इंटरनेट वेबसाइट	22	73	5
रेडियो	18	78	4

i.परिवार तथा पति / जीवन साथी के साथ सम्बन्ध से सम्बन्ध

लोकनीति के आंकड़े स्पष्ट रूप से संकेत देते हैं कि अधिकांश भारतीय मतदाता जो अपने वोट का फैसला स्वयं नहीं करते हैं, वे किसी अन्य की तुलना में मार्गदर्शन के लिए अपने परिवार के सदस्यों या अपने पति या पत्नी पर अधिक निर्भर हैं । निःसंदेह यह एक सार्वभौमिक गुण है। मतदाताओं के लिए अपने निकटतम लोगों से राजनीतिक संकेत लेना स्वाभाविक है। परिवार राजनीति पर चर्चा करने के लिए एक प्राकृतिक स्थान है और परिवार के सदस्य ज्यादातर सामान्य राजनीतिक विकल्प साझा करते हैं और अक्सर इकाई के रूप में मतदान करते हैं (बेरेलसन, लाज़र्सफेल्ड और मैकफी, 1954)। हालाँकि, दिलचस्प बात यह है कि भारतीय मतदाताओं की मतदान पसंद पर परिवार का प्रभाव, भले ही किसी भी अन्य प्रभाव से अधिक हो, वास्तव में घट रहा है। 1996 में, सलाह मानने वाले 75 प्रतिशत मतदाता परिवार के किसी सदस्य या जीवनसाथी की राय पर चलते थे। 2004 में यह अनुपात मामूली रूप से गिरकर 73 प्रतिशत हो गया और फिर 2009 में भारी गिरावट के साथ 56 प्रतिशत हो गया। 2014 में, यह और गिरकर 51 प्रतिशत हो गया।

सारणी 2.3 मत देने से पहले सलाह लेने वाली महिला मतदाता प्रतिशत में

	सलाह ली						
चुनाव	**स्वयं का निर्णय**	**सलाह ली**	**पति तथा परिवार**	**समुदाय का नेता**	**मित्र तथा अन्य साथी**		**कोई जवाब नहीं**
1996	74	26	19	2	2	3	0
2004	63	35	27	4	3	1	2
2009	54	41	25	5	3	8	5
2014	62	35	20	5	3	7	4

स्रोत:सीएसडीएस द्वारा राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन

2019 के लोक सभा चुनावों के दौरान किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि महिलाओं के महत्वपूर्ण निर्णय जैसे शिक्षा, आजीविका के लिए कार्य तथा विवाह आदि के निर्णय परिवार के सदस्यों से परामर्श के बाद लिए जाते है तो मतदान तो वास्तव में एक अलग पहलू है । यदि विवाहित और अविवाहित महिलाओं की राय पर नजर डाले तो पैटर्न में कुछ अंतर हैं - अविवाहित महिलाओं में प्रत्येक पांच में से 2 (42%) महिलाएं स्वयं निर्णय लेती हैं, जबकि विवाहित महिलाओं प्रत्येक पांच में से एक (20%) ही निर्णय लेती हैं। स्वतंत्र रूप से शिक्षा के बारे में. इस प्रकार, विवाहित महिलाओं के लिए, पति का प्रभुत्व स्पष्ट है, छह में से एक महिला (16%) को उनके शैक्षिक निर्णयों के संबंध में उनके पति द्वारा निर्देशित किया जाता है। बड़ी संख्या में भारतीय महिलाएं भी काम करने के अपने निर्णय के संबंध में परिवार के पुरुष सदस्यों द्वारा निर्देशित होती हैं। सर्वेक्षण में शामिल लगभग एक-तिहाई महिलाएँ अपने निर्णय स्वयं लेती हैं, जबकि लगभग पाँचवीं महिलाएँ परिवार के परामर्श से अपने निर्णय लेती हैं। इस संबंध में अविवाहित महिलाओं को अधिक स्वतंत्रता है, क्योंकि लगभग आधी (49%) अविवाहित महिलाएं स्वयं निर्णय लेती हैं, जबकि केवल एक तिहाई (33%) विवाहित महिलाएं ही काम के संबंध में स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम हैं। महिलाओं के व्यवहार को परिवार के सम्मान के साथ जोडा जाता है इसलिए उनके प्रत्येक कदम को परिवार के सदस्यों द्वारा निर्देशित किया जाता है (रना तथा माधव, 2022)|

j.राजनीति और राजनीतिक चर्चा में रुचि

चुनावों में मतदान चुनावी भागीदारी का एक रूप है। यदि किसी को राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को सही मायने में समझना है, तो इसे चुनावी और दलीय राजनीति में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के संदर्भ में देखना होगा। महिलाओं का मतदान के मामले की तरह ही चुनावी और दलीय राजनीति में भी भागीदारी बढ़ी है। जब कोई चुनावी गतिविधियों के बारे में बात करता है, तो वह चुनावी बैठकों या रैलियों में भाग लेने से लेकर विशेष पार्टियों या उम्मीदवारों के लिए योगदान देने या धन इकट्ठा करने तक की कई गतिविधियों की बात करता है। विश्लेषण से संकेत मिलता है कि अतीत में बहुत सी महिलाओं ने इस प्रकार की चुनाव-संबंधी गतिविधियों में भाग नहीं लिया है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में भागीदारी में वृद्धि हुई है। चुनाव संबंधी सभी गतिविधियों में से, महिलाओं की चुनावी बैठकों या रैलियों में भाग लेने की अधिक संभावना है। 1996 के लोकसभा चुनाव में, 7% महिला मतदाताओं ने चुनावी बैठकों में भाग लेने की बात कही और 2019 के अध्ययन में, 18% महिलाओं ने चुनावी बैठकों में भाग लेना स्वीकार किया है। महिलाएं अन्य चुनावी गतिविधियों में भागीदारी, जैसे कि राजनीतिक रैली में शामिल होना, घर-घर जाकर प्रचार करना, चुनाव सामग्री वितरित करना या दान देना और पार्टी फंड इकट्ठा करना, भी पिछले कुछ वर्षों में बढ़ा है (सारणी ....)।

सारणी 2.4 महिलाओं की चुनावी भागीदारी: 1996-2019 (%)

	एनईएस (1996)	एनईएस (1999)	एनईएस (2004)	एनईएस (2009)	एनईएस (2014)	महिला अध्ययन (2019)
चुनावी रैली/ बैठक में भाग लिया	7	11	10	7	12	18
किसी भी चुनावी अभियान में भाग लिया	_	6	6	5	5	11
घर घर जाकर चुनाव प्रचार में भाग लिया	5	5	5	6	4	14
किसी भी राज. पार्टी के पर्चे बांटे	_	5	6	_	4	11
किसी भी राज. पार्टी के लिए धन दिया/ एकत्र किया	_	7	7	_	3	9

ऐसी विभिन्न चुनावी गतिविधियाँ हैं जिनमें महिलाएँ चुनाव से पहले और चुनाव के दौरान भाग लेती हैं। इन विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में भागीदारी का स्तर एक समान नहीं है। कुछ महिलाएँ एक प्रकार की गतिविधि में दूसरे की तुलना में अधिक सक्रिय होती हैं। इस डाटा के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि पिछले कुछ वर्षों में महिलाएं चुनावी राजनीति में अधिक सक्रिय हो गई हैं। 1996 के लोकसभा चुनाव के दौरान, 95% महिला मतदाता राजनीति में बिल्कुल भी सक्रिय नहीं थीं और 5% ने भागीदारी का निम्न स्तर दिखाया।

k. देश की समस्याएं: बेरोजगारी तथा महंगाई

पुरुषों की तरह, महिलाओं के भी अपने विचार हैं कि वे क्या सोचती हैं कि यह भारत जैसे देश के लिए सबसे बड़ी समस्या क्या है। सर्वेक्षण में शामिल महिलाओं में से 20% ने बताया कि राज्य में बेरोजगारी आज देश की सबसे महत्वपूर्ण समस्या है (तालिका 7.4)। इसके बाद गरीबी आती है, जहां प्रत्येक महिला में से एक ने इसे सबसे बड़ी समस्या (13%) बताया। 8% महिलाओं द्वारा भ्रष्टाचार और मूल्य वृद्धि (महंगाई) देश की महत्वपूर्ण समस्या बताई गई।

सारणी 2.5 बेरोजगारी को सबसे महत्वपूर्ण समस्या बताया गया

महिला मतदाताओं की दृष्टि में भारत की समस्या	प्रतिशत में
बेरोजगारी	20
गरीबी	13
मूल्य वृद्धि (महंगाई)	8
भ्रष्टाचार	8
सामाजिक बुनियादी ढाँचा	4
महिला-विशिष्ट मुद्दे	4
खेती/कृषि संबंधी मुद्दे	2
आतंकवाद	2
नियम और कानून	2
अन्य मामले	10
प्रतिक्रिया नहीं दी	22

स्रोत: लोकनीति-सीएसडीएस द्वारा किया गया महिला अध्ययन 2019।

निष्कर्ष

भारतीय चुनावों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के इस सकारात्मक विकास को ध्यान में रखते हुए, यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि इसमें किसका योगदान रहा है। हालाँकि पिछले दशक में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि देखी गई है, लेकिन यह असमान रही है। कुछ राज्यों में महिलाओं के मतदान में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है जबकि कुछ राज्य ऐसे भी हैं जहां महिलाएं अभी भी मतदान के मामले में पुरुषों से काफी पीछे हैं। इस अध्ययन के अंतर्गत मुख्य रूप से बढ़े हुए मतदान की प्रवृत्ति और उसके कारणों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है| अक्सर महिलाओं के मतदान में वृद्धि का स्पष्टीकरण भारतीय संविधान के 73वें और 74वें संशोधन का प्रभाव है, जो महिलाओं के लिए स्थानीय निकाय चुनावों में कुल सीटों का एक तिहाई आरक्षित करता है। यह संवैधानिक प्रावधान महिलाओं को न केवल चुनावों में बल्कि अन्य चुनावी गतिविधियों में भी सक्रिय भाग लेने का स्थान और अवसर प्रदान करता है। महिलाओं ने ग्राम सभा की बैठकों और अन्य संबंधित गतिविधियों में भाग लेना शुरू कर दिया है (छिब्बर, 2002)। लेकिन फिर सवाल यह उठता है कि क्यों केवल कुछ ही राज्यों में महिलाओं के बीच उच्च मतदान दर्ज किया गया

है और अन्य राज्य पिछड़ गए हैं | कपूर और रवि (2014) के निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि सामाजिक-आर्थिक संकेतकों पर कम लैंगिक समानता वाले राज्य मतदान के मामले में विपरीत लैंगिक अंतर दिखाते हैं। वे उन कारकों को भी रेखांकित करते हैं जो महिलाओं के राजनीतिक समाजीकरण को प्रभावित करते हैं जो उन्हें सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करते हैं।

महिलाओं को राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने से रोकने वाले कारक महिलाओं की राजनीतिक रुचि और ज्ञान की कमी, राजनीतिक चर्चा, वोट की प्रभावकारिता में विश्वास, मीडिया एक्सपोज़र और आत्मविश्वास राजनीतिक भागीदारी को कैसे प्रभावित करते हैं।वास्तव में महिलाएँ एक सजातीय समूह नहीं हैं, और चाहे वे युवा हों या वृद्ध, शिक्षित हों या अशिक्षित, ग्रामीण या शहरी क्षेत्रों में रहती हों, निम्न, मध्यम या उच्च वर्ग से संबंधित हों, मायने रखता है। उनके पास अलग-अलग जीवन अनुभव होते हैं जिसके परिणामस्वरूप भागीदारी के विभिन्न स्तर होते हैं। यद्यपि राजनीति में महिलाओं की रुचि बढ़ रही है, और राजनीति की चर्चाओं को इस रुचि को प्रोत्साहित करने के लिए देखा जा सकता है, राजनीतिक चर्चा में महिलाओं की भागीदारी अभी भी सीमित है। इसके अलावा, महिलाओं को जनसंचार माध्यमों के विभिन्न रूपों के माध्यम से राजनीतिक रूप से प्रासंगिक जानकारी की कमी है, और इससे उन लोगों का अनुपात बढ़ जाता है जो राजनीति को जटिल और समझने में कठिन पाते हैं। ये बाधाएँ व्यक्तिगत बाधाएँ हैं, लेकिन कोई भी 'महिलाओं की राजनीति में कम रुचि होने' या 'राजनीति महिलाओं के लिए नहीं होने' की गहरी जड़ें जमा चुकी लैंगिक रूढ़िवादिता की व्यापकता से इनकार नहीं कर सकता है। इस तरह की रूढ़िवादिता का राजनीति के प्रति महिलाओं की धारणा पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। महिलाओं की अपेक्षित भूमिकाओं के बारे में ये पारंपरिक दृष्टिकोण और रूढ़ियाँ जीवन में ही सीख ली जाती हैं, जिसके परिणामस्वरूप महिलाएं राजनीति से दूर हो जाती हैं और समाज द्वारा 'अपेक्षित' व्यवहार का पालन करती हैं। (महिला अध्ययन, 2019)| जिस तरह से अधिकांश महिलाओं का समाजीकरण किया जाता है, और विभिन्न व्यक्तिगत कारकों, जैसे घरेलू जिम्मेदारियां, समय की कमी, कम प्रतिष्ठा, संसाधनों की कमी, समर्थन और वित्तीय स्वतंत्रता और महिलाओं की शिक्षा का औसत निम्न स्तर, के कारण महिलाओं को अनुचित दबाव जो राजनीतिक हित और दृष्टिकोण के विकास में बाधा डालता सहन करना पड़ता है।

References: (APA STYLE,7th Edition 2020)

1. Anderson, C. J. (2007). The End of Economic Voting? Contingency. Annual Review of Political Science, 10, 271-96.
2. Banerjee, A., Green, D. P., McManus, J., & Pande, R. (2014). Are poor voters indifferent to whether elected leaders are criminal or corrupt? A vignette experiment in rural India. Political Communication, 31(3), 391-407.
3. Biswas, S. (2014, July 27). Is India's Politics Becoming Less Dynastic? BBC News. www.bbc.com/news/world-asia-india-28478544
4. Chandra, K. (2014). Hardly the end of dynastic rule. Economic and Political Weekly, 25-28.
5. Chandra, Kanchan. (2004). Why ethnic parties succeed : patronage and ethnic head counts in India. Cambridge University Press.
6. Dal Bó, E., Dal Bó, P., & Snyder, J. (2009). Political dynasties. The Review of Economic Studies, 76(1), 115-142.
7. Dehejia, V.,& Subramanya, R. (2014, Feb 16). Why no centre-right political party in India today? Business Standard. https://www.business-standard.com/amp/article/opinion/vivek-dehejia-rupa-subramanya-why- no-centre-right-political-party-in-india-today-114021600697_1.html
8. Election Commission, Government of India. (2014, March 8). Dynamics of elevation of political parties to State or National Party.[Press release]. https://pib.gov.in/newsite/printrelease.aspx?relid=104537

9. Farooqui, A., & Sridharan, E. (2014). Is the coalition era over in Indian politics?. The Round Table, 103(6), 557-569.
10. Gidwani, D. (2014, September 17). After Tipu, Teju Pratap ninth of Yadav clan to enter UP politics. DNA India. https://www.dnaindia.com/india/report-after-tipu-teju-pratap-ninth-of-yadav-clan-to-enter-up-politics-2019167
11. Gottipati, S.,& Singh, K, R. (2014, April 17). India set to challenge US for election-spending record. Business Today. https://www.businesstoday.in/in-depth/elections-2014-narendra-modi-takes-charge/story/india-set-to-challenge-us-for-election-spending-record-133277-2014-03-10
12. Gowen, A. (2015, February 16). Ex-movie star and convicted politician still running her Indian state. The Washington Post. https://www.washingtonpost.com/world/asia_pacific/ex-movie-star-and-convicted-politician-still-running-her-indian-state/2015/02/16/bc2f48d6-abc2-11e4-8876-460b1144cbc1_story.html
13. Gupta, P., & Panagariya, A. (2014). Growth and election outcomes in a developing country. Economics & Politics, 26(2), 332-354.
14. Jaffrelot, C. (2013). Do Indians vote their caste—while casting their vote?. Routledge handbook of Indian politics, 107.
15. Kulkarni, D. (2013, December 23). Vote for India, free it of dynasty rule: Narendra Modi. DNA India. https://www.dnaindia.com/mumbai/report-vote-for-india-free-it-of-dynasty-rule-narendra-modi-1939374
16. Linden, L. L. (2004). Are incumbents really advantaged? The preference for non-incumbents in Indian national elections. Unpublished paper.
17. Learning from the pioneer. (2015, May 28). Economist. https://www.economist.com/asia/2015/05/28/learning-from-the-pioneer
18. Lewis-Beck, M. S., & Stegmaier, M. (2000). Economic determinants of electoral outcomes. Annual review of political science, 3(1), 183-219.
19. Lokniti Team. (2009). National election study 2009: A methodological note. Economic and Political Weekly, 196-202.
20. Mehta, P. B. (2001). Reform political parties first. In Seminar-New Delhi- (pp. 38-41). Malyika Singh.
21. Mehta, P. B. (2012). Mandate for a Dream. Indian Express, March, 7.
22. Narendra Modi thanks Gujarat for hat-trick: Highlights of speech. (2012, December 20). NDTV. https://www.ndtv.com/assembly/narendra-modi-thanks-gujarat-for-hat-trick-highlights-of-speech-508126
23. Nitish's Bihar: From goonda raj to vikas raj. (2010, November 24). NDTV. https://www.ndtv.com/assembly/nitishs-bihar-from-goonda-raj-to-vikas-raj-440147
24. Panagariya, A., & Gupta, P. (2014, May 12). What voters reward: Evidence from the 2009 Indian parliamentary elections. Idea for India. https://www.ideasforindia.in/topics/governance/what-voters-reward-evidence-from-the-2009-indian-parliamentary-elections.html

25. Panagariya, A. (2009, May 28). Is anti-incumbency really pass? The Economic Times. https://economictimes.indiatimes.com/opinion/guest-writer/is-anti-incumbency-really-pass/articleshow/msid-4586665,curpg-2.cms?from=mdr
26. Rai, S., & Vaishnav,M. (2014, July 28). The politics and plumbing of reforms. Mint. https://www.livemint.com/Opinion/TKFuvmJ7J8ziPDwru0TzeM/The-politics-and-plumbing-of-reforms.html
27. Sebastian, S, K. (2015, January 31). BJP has ended dynasty politics. The Hindu. https://www.thehindu.com/news/cities/Delhi/bjp-has-ended-dynasty-politics/article6841190.ece
28. Sircar, N.,& Vaishnav, M. (2014, April 3). Guest Post: the rural/urban divide dies out. Financial Times. https://www.ft.com/content/925f0b70-3d0d-32ef-ab6b-b6840bb363a4
29. Sharma, R. (2013). The Rise of the Rest of India: How States Have Become the Engines of Growth. Foreign Affairs, 92, 75.
30. Smith, D. M. (2012). Succeeding in politics: dynasties in democracies. University of California, San Diego.
31. Sridharan, E. (2014). India's Watershed Vote: Behind Modi's Victory. Journal of Democracy, 25(4), 20-33.
32. Subramanian, A. (2009, April 17). The India Vote. Wall Street Journal. https://www.wsj.com/articles/SB123990409247725869
33. Suri, K. C. (2004). Andhra Pradesh: Fall of the ceo in arena of democracy. Economic and Political Weekly, 5493-5497.
34. Uppal, Y. (2009). The disadvantaged incumbents: estimating incumbency effects in Indian state legislatures. Public choice, 138, 9-27.
35. Vaishnav, M., & and Smogard, D. (2014, June 10,). A New Era in Indian Politics? Carnegie Endowment for International Peace. https://www.livemint.com/Opinion/TKFuvmJ7J8ziPDwru0TzeM/The-politics-and-plumbing-of-reforms.html
36. Vaishnav, M. (2013, October 9). The Modi Debate Worth Having in India. Carnegie Endowment for International Peace. https://carnegieendowment.org/2013/10/09/modi-debate-worth-having-in-india-pub-53248
37. Vaishnav, M. (2015). Understanding the Indian voter. Carnegie Endowment for International Peace.
38. Vaishnav, M. (2013, November 13). The Complicated Rise of India's Regional Parties. Carnegie Endowment for International Peace. https://carnegieendowment.org/2013/11/13/complicated-rise-of-india-s-regional-parties-pub-53585
39. Vaishnav, M., & Swanson, R. (2015). Does good economics make for good politics? Evidence from Indian states. India Review, 14(3), 279-311.
40. Yadav, Y. (1999). Electoral Politics in the Time of Change: India's Third Electoral System, 1989-99. Economic and Political Weekly, 34(34/35), 2393–2399. http://www.jstor.org/stable/4408334
41. Yadav, Y. (2000). Understanding the second democratic upsurge: Trends of Bahujan participation in electoral politics in the 1990s. Transforming India: Social and political dynamics of democracy, 145.